

बपतिस्मा आधारित नवजीवन क्या है?

झूठी शिक्षाओं के बारे में प्रश्न

बपतिस्मा आधारित नवजीवन, यह मान्यता है कि उद्धार के लिए बपतिस्मा का लिया जाना आवश्यक है, या अधिक सटीकता से कहना, जब तक एक व्यक्ति को पानी का बपतिस्मा नहीं दिया जाता तब तक उसका नया जन्म नहीं होता है। बपतिस्मा आधारित नवजीवन अँसख्य मसीही सम्प्रदायों का एक घटक हैं, परन्तु इसे पुनर्स्थापना अर्थात् बहाली के आन्दोलन में कलीसियाओं के द्वारा विशेष रूप से चर्च ऑफ क्राइस्ट और इन्टरनेशनल चर्च ऑफ क्राइस्ट के द्वारा अत्यधिक प्रोत्साहित किया गया है।

बपतिस्मा आधारित नवजीवन के अधिवक्ता अपने समर्थन के लिए पवित्र शास्त्र के वचनों को जैसे कि मरकुस 16:16, यूहन्ना 3: 5, प्रेरितों के काम 2:38, प्रेरितों के काम 22:16, गलतियों 3:27, और 1 पतरस 3:21 का उपयोग करते हैं। और, दिए हुए वचन पूर्ण रूप से उद्धार के लिए बपतिस्मा को लिए जाने की आवश्यकता का संकेत देते हैं। यद्यपि, इन वचनों की बाइबल आधारित और प्रासंगिक रूप से संगत शुद्ध व्याख्याएँ पाई जाती हैं, जो बपतिस्मा आधारित नवजीवन का समर्थन नहीं करती हैं।

बपतिस्मा आधारित नवजीवन के अधिवक्ता विशेष रूप से चार-खण्डों के एक सूत्र अर्थात् फार्मूले को प्रस्तुत करते हैं कि उद्धार की प्राप्ति कैसे की जाती है। उनका विश्वास यह है कि एक व्यक्ति को बचाए जाने के लिए विश्वास, पश्चाताप, अंगीकार और बपतिस्मा लेना अनिवार्य है। वे इसमें इस

तरह से इसलिए विश्वास करते हैं, क्योंकि बाइबल के ऐसे वचन पाए जाते हैं, जो यह दर्शाते हुए प्रतीत होते हैं कि उद्धार के लिए इनमें से प्रत्येक कार्य को पूरा किया जाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, रोमियों 10:9-10 उद्धार को अंगीकार के साथ सम्बन्धित करता है। प्रेरितों के काम 2:38 उद्धार को पश्चाताप और बपतिस्मा के साथ जोड़ देता है।

उद्धार के लिए अनिवार्य रूप से पश्चाताप को बाइबल आधारित समझा गया है। पश्चाताप मन का एक परिवर्तन है। उद्धार के सम्बन्ध में पश्चाताप मसीह को अस्वीकृति करने के स्थान पर मसीह को स्वीकृत करने की ओर से अपने मन को परिवर्तित करना है। यह बचाने वाले विश्वास का एक पृथक कदम नहीं है। इसकी अपेक्षा, यह बचाने वाले विश्वास के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। कोई भी यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में, विश्वास के माध्यम से अनुग्रह के द्वारा, तब तक प्राप्त नहीं कर सकता है, जब तक कि वह इस बारे में अपने को परिवर्तित न करे ले कि वह कौन है और उसने क्या किया है।

उद्धार के लिए अनिवार्य रूप से विश्वास के प्रदर्शन को बाइबल आधारित समझा गया है। यदि किसी व्यक्ति ने वास्तव में यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया है, तो इसका परिणाम दूसरों के सामने घोषणा करना होगा। यदि कोई व्यक्ति मसीह के कारण लज्जित है और/या सुसमाचार के सन्देश के कारण लज्जित है, तो इस बात की बहुत कम सम्भावना है कि उस

व्यक्ति ने सुसमाचार को समझा है या नहीं या मसीह के उस मुक्ति का अनुभव किया है या नहीं जिसे वह प्रदान करता है।

उद्धार के लिए अनिवार्य रूप से मसीह की पहचान के साथ एक होने को बाइबल आधारित समझा गया है। एक मसीही विश्वासी का बपतिस्मा मसीह की मौत, उसके साथ गाड़े जाने और उसके पुनरुत्थान में भागी होने की पहचान को दर्शाता है (रोमियों 6:3-4)। जहाँ तक बात अंगीकार की है, यदि कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेने के लिए तैयार नहीं है — तो वह यीशु मसीह के द्वारा किए हुए उद्धार में अपनी पहचान को बनाने के लिए तैयार नहीं है — उस व्यक्ति में यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा नई सृष्टि बनने की सम्भावना बहुत ही कम पाई जाती है (2 कुरिन्थियों 5:17)।

जो लोग बपतिस्मा आधारित नवजीवन के विरोध में वाद प्रस्तुत करते हैं और/या उद्धार प्राप्त करने के लिए इस चार-खण्डों के सूत्र अर्थात् फार्मूला के विरुद्ध बात करते हैं, वे इन कार्यों को ऐसे गुणों के रूप में नहीं मानते हैं, जो उद्धार को कमा लेते हैं। पश्चाताप, अंगीकार करना, इत्यादि, एक व्यक्ति को उद्धार के योग्य नहीं बना देता है। इसकी अपेक्षा, अधिकारिक दृष्टिकोण यह है कि विश्वास, पश्चाताप, अंगीकार और बपतिस्मा "आज्ञाकारिता के कार्य" हैं, यह ऐसा कार्य है, जिसे एक व्यक्ति को परमेश्वर की ओर से उद्धार को दिए जाने के लिए अवश्य करना चाहिए। जबकि मानक प्रोटेस्टेंट समझ यह है कि विश्वास ही एक ऐसी बात है, जिसकी आवश्यकता परमेश्वर से उद्धार पाने के लिए आवश्यक है, वे जो बपतिस्मा आधारित नवजीवन के लिए

विनती करते हैं, उनका विश्वास यह है कि बपतिस्मा — और, कुछ लोगों के लिए, पश्चात्ताप और अंगीकार किया जाना — परमेश्वर की ओर से उद्धार को दिए जाने के लिए आवश्यक अतिरिक्त बातें हैं।

बपतिस्मा आधारित नवजीवन दृष्टिकोण के साथ समस्या यह है कि बाइबल आधारित ऐसे कई वचन हैं, जो साफ और स्पष्ट रूप से घोषणा करते हैं कि उद्धार के लिए विश्वास की ही एकमात्र आवश्यकता है। यूहन्ना 3:16, बाइबल में सबसे प्रसिद्ध वचनों में से एक ऐसे कहता है कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई विश्वास करे वह नष्ट न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" प्रेरितों के काम 16:30, फिलिप्पी के बन्दीगृह के दरोगा ने प्रेरित पौलुस से पूछा कि, "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" यदि पौलुस को चार-खण्डों वाले सूत्र को प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ होता, तो सब कुछ यहीं पर समाप्त हो गया होता। पौलुस की प्रतिक्रिया सरल सी थी: "प्रभु यीशु मसीह में विश्वास कर, तो और तेरा घराना उद्धार पाएगा" (प्रेरितों के काम 16:31)। कोई बपतिस्मा नहीं, कोई अंगीकार नहीं, मात्र विश्वास करना ही पर्याप्त है।

नए नियम में ऐसे दर्जनों वचन पाए जाते हैं, जो अपने सन्दर्भ में उल्लिखित किसी भी अन्य आवश्यकता के बिना विश्वास/निष्ठा को ही मुक्ति प्राप्ति के लिए आवश्यक शर्त के रूप में उल्लेख करते हैं। यदि बपतिस्मा, या कुछ और, उद्धार के लिए आवश्यक है, तो यह सारे वचन गलत हैं, और बाइबल में त्रुटियाँ हैं और इसलिए अब यह हमारे भरोसे के योग्य नहीं हैं।

मुक्ति के लिए विभिन्न आवश्यकताओं के ऊपर नये नियम का सम्पूर्ण अध्ययन करना आवश्यक नहीं है। उद्धार प्राप्त करना एक प्रक्रिया या बहु-चरणों में पूरा किए जाने वाला एक सूत्र नहीं है। उद्धार एक तैयार किया हुआ उत्पाद है, न कि एक प्रयोग विधि है। उद्धार पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करें, और हम बच जाएँगे।

स्रोत / Source: <https://www.gotquestions.org/Hindi/Hindi-baptismal-regeneration.html> | English: <https://www.gotquestions.org/baptismal-regeneration.html>

www.GotQuestions.org · <https://www.gotquestions.org/Hindi> · © Copyright
Got Questions Ministries · questions@gotquestions.org